IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 4, October-December, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971 (ONLINE)

वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता

बबिता कुमारी
NET, JRF
क्रमांक- *BR04600116*
पैट क्रमांक- *E2209003*
हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

सार–संक्षेपः

विकसित और परिवर्तनशील वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भाषाएँ केवल संचार का साधन नहीं रहीं बल्कि वे सांस्कृतिक पहचान, आर्थिक संभावनाओं, राजनीतिक प्रभाव और वैश्विक संवाद के माध्यम बन चुकी हैं। ऐसी ही एक भाषा है हिन्दी एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा, व्यापक बोलीवाले जनसमूह और तेजी से बढ़ते डिजिटल उपयोग के साथ। हिन्दी की ऐतिहासिक जड़ें देववाणी संस्कृत एवं प्राकृत परंपराओं से जुड़ी हैं। मध्यकालीन अवधी, ब्रज, खड़ी बोली एवं अन्य भाषायी रूपों ने मिलकर आधुनिक हिन्दी का विकास सुनिश्चित किया। बारिश की तरह विविध जनसमूहों के साथ जुड़ी यह भाषा उत्तर भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने में गहरी छपी है। साहित्य, धर्म, लोक कला, नाटक, संगीत और फिल्में इन सबने हिन्दी को सांस्कृतिक समृद्धि और जनप्रियता प्रदान की है। इस विरासत ने हिन्दी को न केवल उपन्यासों और कविताओं की भाषा बनाया है, बल्कि सामाजिक चेतना और सामूहिक पहचान का भी माध्यम बनाया है। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर हिन्दी की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है एवं इसकी जड़ें, विस्तार, चुनौतियाँ तथा भविष्य की संभावनाएँ इस अध्ययन का मुख्य बिंदु है।

परिचयः

वर्तमान युग को अक्सर सूचना तथा संचार क्रांति का युग कहा जाता है। वैश्वीकरण, डिजिटल तकनीक का प्रसार, प्रवासन की तेज़ धारा और सांस्कृतिक आदान–प्रदान ने भाषाओं को नए संदर्भ प्रदान किए हैं। ऐसी ही एक समृद्ध और जीवंत भाषा हिन्दी है, जिसकी जड़ों का इतिहास, साहित्यिक परंपरा तथा सामाजिक उपयोगिता अत्यंत व्यापक है। हिन्दी भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित एक प्रमुख भाषा है, जिसके साहित्यिक स्रोत संस्कृत, प्राकृत, अवधी, ब्रज और खड़ी बोली से प्रभावित रहे हैं। तुलसीदास, कबीर, सूरदास, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा और प्यारे लाल नहर आदि जैसे साहित्यकारों ने हिन्दी को गहन दार्शनिक, सामाजिक और भावनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। इन रचनाओं ने न केवल भारतीय सांस्कृतिक चेतना को आकार दिया, बल्कि हिन्दी को सामाजिक और दार्शनिक विमर्श का एक समृद्ध माध्यम भी बनाया। यह ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत वैश्विक मंच पर हिन्दी के संदर्भ को बल देती है क्योंकि भाषा का प्रभाव केवल संख्या या तकनीकी उपयोग तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसकी साहित्यिक–ऐतिहासिक प्रासंगिकता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आज की दुनिया में हिन्दी बोलने वालों की संख्या करोड़ों में है। यदि हम हिन्दी भाषियों की संख्या को देखें तो यह संख्या अनेक अन्य वैश्विक भाषाओं के साथ तुलनीय है। भारत की वैश्विक आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक उपस्थिति में वृद्धि के साथ हिन्दी की भूमिका भी स्वाभाविक रूप से बढ़ रही है। भारत का बढ़ता हुआ आर्थिक तथा राजनैतिक प्रभाव, द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय मंचों पर उसकी उपस्थिति और वैश्विक संस्थानों में भारतीय प्रतिनिधित्व हिन्दी के महत्त्व को बढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रवासियों और वैश्विक भारतीय समुदायों के माध्यम से हिन्दी विश्व के कई देशों जैसे– अमेरिका, ब्रिटेन, यूएसए के विभिन्न हिस्से, अफ्रीका, खाड़ी राष्ट्र और दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों में बोली तथा समझी जाती है। यह प्रवासन और डायस्पोरा हिन्दी को वैश्विक पहचान देने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

वैश्विक बाजार में भारत का महत्त्व बढ़ने से हिन्दी का व्यावसायिक महत्त्व भी बढ़ा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए भारतीय उपभोक्ता बाजार तक पहुँचने हेतु हिन्दी में विज्ञापन, ग्राहक सेवा, उत्पाद जानकारी और डिजिटल सामग्री का उत्पादन आवश्यक हो गया है। ई–कॉमर्स, ग्राहक सहायता केंद्र, हेल्थकेयर, वित्तीय सेवाएँ और तकनीकी सेवाओं में भारतीय उपयोगकर्ताओं के साथ प्रभावी संवाद हेतु हिन्दी का ज्ञान लाभप्रद है। स्थानीय भाषा में सेवाओं एवं समाग्री का प्रयोग उपभोक्ता विश्वास और सहभागिता बढ़ाता है, जिससे कंपनियों को वाणिज्यिक सफलता मिलती है। अतः व्यापारिक परिदृश्य में हिन्दी की प्रासंगिकता केवल सांस्कृतिक या भावनात्मक नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष आर्थिक महत्त्व की भी बनी हुई है।

हिन्दी में वैज्ञानिक, तकनीकी और शैक्षिक सामग्री का सृजन व उपलब्धता बढ़ने लगी है। विश्वविद्यालय, शोध संस्थान और शैक्षिक मंच हिन्दी में पाठ्यक्रम, शोध पत्र, लोकप्रिय विज्ञान लेख तथा शैक्षिक वीडियो तैयार कर रहे हैं। यह स्थानीय भाषा में शिक्षा के अधिकार को सुदृढ़ करता है और ज्ञान के लोकतंत्रीकरण में सहायक है। इसके अलावा, हिन्दी में उपलब्ध सामग्री डिजिटल रूप

में साझा हो रही है, जिससे शोध एवं अध्ययन के अवसर विस्तृत हो रहे हैं। परंतु, तकनीकी व वैज्ञानिक शब्दावली का समुचित विकास और मानकीकरण आवश्यक है ताकि हिन्दी में उच्चस्तरीय शैक्षिक संवाद सहज तथा सुसंगत रूप से सम्भव हो सके।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भाषा की प्रासंगिकता केवल उसकी लोकप्रियता पर निर्भर नहीं करती; यह उस भाषा की बहुभाषिक संवाद क्षमता और अन्य भाषाओं के साथ सहयोग पर भी निर्भर करती है। भारत स्वयं एक बहुभाषीय राष्ट्र है जहाँ हिन्दी कई राज्यों में प्रमुख संपर्क भाषा है, परन्तु वहाँ अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ भी सजीव हैं। विश्व स्तर पर हिन्दी की प्रासंगिकता को बढ़ाने हेतु इसे अन्य भाषाओं के साथ संवादात्मक एवं अनुवाद योग्य बनाया जाना आवश्यक है। बहुभाषिक नीतियाँ, भाषा शिक्षण कार्यक्रम और अनुवाद एवं आलोचनात्मक संसाधन हिन्दी को अंतरराष्ट्रीय ज्ञान–प्रणालियों से जोड़ने का माध्यम बनेंगे।

वर्तमान समय में हिन्दी की वैश्विक प्रासंगिकता अनेक कारणों से स्थिर और बढ़ती हुई दिखाई देती है। इसकी ऐतिहासिक–सांस्कृतिक गहराइयाँ, बड़ा बोलने वाला जनसमूह, आर्थिक बाजार में भारत की महत्ता, डिजिटल मीडिया में हिन्दी की बढ़ती उपस्थिति और सांस्कृतिक निर्यात ये सभी कारक हिन्दी को वैश्विक परिदृश्य पर महत्त्व प्रदान करते हैं। तथापि, हिन्दी के व्यापक अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्य बनने के लिए तकनीकी अनुकूलन, शैक्षिक संसाधनों का सुदृढ़ीकरण, मानकीकरण और बहुभाषिक सहयोग अनिवार्य हैं। यदि ये चुनौतियाँ दूर की जाएँ और समुचित नीतियाँ अपनाई जाएँ, तो हिन्दी न केवल भारतीय उपमहाद्वीप की संपर्क भाषा के रूप में बल्कि वैश्विक ज्ञान, संस्कृति और वाणिज्य के मंच पर भी अपना प्रभाव और उपयोगिता सिद्ध कर सकती है।

हिन्दी की वैश्विक प्रासंगिकता कई कारणों से उभरकर सामने आती है:

- **जनसांख्यिकीय बल:** हिन्दी बोलने वाले करोड़ों लोग विश्व के विभिन्न हिस्सों में वितरित हैं। भारत की विशाल आबादी और प्रवासन के कारण हिन्दी विदेशों में भी व्यापक रूप से सुनने और बोलने को मिलती है। प्रवासी भारतीय समुदायों ने अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त अरब अमीरात, सिंगापुर, अफ्रीका तथा यूरोप के अन्य देशों में हिन्दी को स्थापित किया है।
- **आर्थिक और व्यापारिक संबंध:** वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की बढ़ती भूमिका हिन्दी की उपयोगिता को बढ़ाती है। व्यापार, सेवा, सूचना प्रौद्योगिकी, कोल्ड स्टार्टअप और ग्राहक सहायता क्षेत्रों में हिन्दी का ज्ञान कई व्यापारिक संदर्भों में लाभदायक साबित होता है। भारतीय उपयोगकर्ता–अधारित सेवाओं एवं सामग्री के विस्तार ने हिन्दी को ग्राहक इंटरफेस और विपणन की भाषा के रूप में मजबूती दी है।
- **सांस्कृतिक प्रभाव:** हिन्दी सिनेमा (बॉलीवुड), संगीत, टेलीविजन और डिजिटल मनोरंजन के रूप में वैश्विक दर्शकों तक पहुँची है। बॉलीवुड फिल्मों ने न केवल उपमहाद्वीप में बल्कि मध्य पूर्व, अफ्रीका, यूरोप और लैटिन अमेरिका के हिस्सों में भी हिन्दी को लोकप्रिय बनाया है। इसके अतिरिक्त भारतीय परंपरा, योग, आयुर्वेद और अध्यात्मिक साहित्य के अनुवाद व प्रचार ने हिन्दी और भारतीय सांस्कृतिक शब्दावली को अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर प्रतिष्ठित किया है।
- **शैक्षिक और अकादमिक प्रसार:** विदेशों के कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा एवं साहित्य का अध्यापन हो रहा है। दक्षिण एशियाई अध्ययन के क्षेत्र में हिन्दी का अध्ययन अकादमिक शोध, अनुवाद और सांस्कृतिक समझ के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही, विदेशी छात्र तथा अनुसंधानकर्ता भारत के सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों का अध्ययन करने हेतु हिन्दी सीखना चुनते हैं, जिससे अन्तर–सांस्कृतिक संवाद को बल मिलता है।
- **डिजिटल और तकनीकी उपस्थिति:** इंटरनेट और स्मार्ट फोन युग में हिन्दी की डिजिटल उपस्थिति में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। स्थानीय भाषा में सामग्री, सोशल मीडिया पर हिन्दी उपयोग, वॉइस असिस्टेंट्स और स्वचालित अनुवाद प्रणालियों में हिन्दी के अंतरण ने इसे वैश्विक डिजिटल भाषा के रूप में स्थापित करने में योगदान दिया है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में हिन्दी समर्थन से यह भाषा न केवल पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकल रही है, बल्कि नवोन्मेषी मंचों पर भी अपना प्रभाव छोड़ रही है।

भाषा का वैश्विक प्रभाव केवल सांस्कृतिक या आर्थिक नहीं होता; यह राजनैतिक और कूटनीतिक आयाम भी रखता है। भारत की बढ़ती वैश्विक सक्रियता चाहे वह बहुपक्षीय मंच हो, विकासशील देशों के समूह हों या वैश्विक संस्थाएँ हिन्दी की उपस्थिति और उपयोगिता को बढ़ाते हैं। अन्तरराष्ट्रीय संगठनों, शिखर सम्मेलनों और द्विपक्षीय वार्ताओं में भाषा नीतियाँ और संवाद की क्षमता देशों के बीच प्रभाव बनाने में सहायक होती हैं। इसके अतिरिक्त प्रवासी समुदायों के माध्यम से हिन्दी एक नरम शक्ति के रूप में भी कार्य करती है।

हिन्दी की वैश्विक प्रासंगिकता के बावजूद कुछ चुनौतियाँ भी हैं जो इस प्रकार है:

- **बहुभाषिकता और प्रतिस्पर्धा:** अंग्रेज़ी जैसी वैश्विक भाषा का प्रभुत्व और वैश्विक संचार में अंग्रेज़ी का केंद्रीकरण हिन्दी के अंतरराष्ट्रीय उपयोग को सीमित कर देता है। तकनीकी, विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के क्षेत्रों में अंग्रेज़ी को प्राथमिक भाषा के रूप में अपनाया जाना हिन्दी के प्रसार के मार्ग में बाधक है।

- **मानकीकरण और विविधता:** हिन्दी के कई बोलियाँ और क्षेत्रीय रूप हैं। इस विविधता ने भाषा की समेकित मानकीकृत छवि बनाने में कठिनाइयाँ पैदा की हैं। क्या केन्द्रीयकृत मानक हिन्दी विश्वस्तर पर अपनाने योग्य होगी, यह एक जटिल प्रश्न है।
- **शिक्षा और संसाधन की कमी:** विदेशी विद्यार्थियों हेतु गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री, शिक्षण संस्थान, प्रशिक्षित शिक्षणकर्मी और उपयुक्त अनुदेश प्रणाली की कमी हिन्दी के वैश्विक प्रसार को नरम बना सकती है। साथ ही, तकनीकी अनुवाद, कोर्पस और डिजिटल संसाधनों का विस्तार आवश्यक है।
- **राजनीतिक व सांस्कृतिक संवेदनशीलताएँ:** भाषा से जुड़े भावनात्मक और राजनैतिक मुद्दे भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार के रास्ते में प्रभाव डाल सकते हैं। अन्य भाषाओं और संस्कृतियों के साथ संतुलन और सम्मान की नीति अपनाना आवश्यक होगा।

हिन्दी की वैश्विक प्रासंगिकता केवल एक सांस्कृतिक या भाषिक घटना नहीं है; यह व्यापक सामाजिक–आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों से जुड़ी है। डिजिटल मीडिया पर हिन्दी की बढ़ती उपस्थिति, भारतीय नवाचारों का वैश्विक प्रसार और वैश्विक समुदायों में भारतीय प्रवासियों की उपस्थिति ने भाषा के लिए नए अवसर खोले हैं। भाषा–आधारित सेवाओं में रोजगार के अवसर, अनुवाद व स्थानीयकरण की आवश्यकता और बहु–भाषिक प्रौद्योगिकी विकास हिन्दी विशेषज्ञों के लिये मांग पैदा कर रहे हैं। साथ ही, वैश्विक संवाद में अधिक भाषाओं की भागीदारी दुनिया को अधिक समावेशी और संवेदनशील बनाएगी। इस परिप्रेक्ष्य में हिन्दी एक महत्वपूर्ण कड़ी बन सकती है।

निष्कर्ष:

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की प्रासंगिकता बहुआयामी है। यह सांस्कृतिक आदान–प्रदान, आर्थिक सहयोग, शैक्षिक अनुसंधान और तकनीकी विकास से जुड़ी हुई है। चुनौतियाँ स्पष्ट हैं परन्तु रणनीतिक औजार, नीति समर्थन और डिजिटल संसाधनों के समुचित विकास से हिन्दी न केवल अपने पारंपरिक आधार को मजबूत रख सकती है, बल्कि वैश्विक मंच पर अपनी भूमिका और प्रभाव भी बढ़ा सकती है। बहुभाषिक वैश्विक समाज में हिन्दी का विकास केवल भाषा के विस्तार की बात नहीं, बल्कि वैश्विक संवाद, समझ और सहयोग की दिशा में एक समृद्ध योगदान होगा।

संदर्भ स्रोतः

1. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय (1996) 21वीं शताब्दी और हिन्दी साहित्य : नये सन्दर्भ, साहित्य भवन, इलाहाबाद, पृ. 89
2. डॉ0 बच्चन सिंह (1978) आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रथम संस्करण–1978, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 57
3. डॉ0 नामवर सिंह (1987) आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, प्रथम संस्करण–1987, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 147
4. रामस्वरूप चतुर्वेदी (1991) हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलहाबाद, पृ. 105
5. मैनेजर पाण्डेय (1992) हिन्दी साहित्य और इतिहास दृष्टि, अरूणोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 68
6. दीक्षा यादव (2016) हिन्दी भाषा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता, विकास प्रकाशन, आगरा, पृ. 39
7. जयदेव कौशिक, (2021), हिंदी की वैश्विक उपस्थिति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 78
8. सुरेश कुमार, (2021), हिंदी का वैश्विक संदर्भ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 19
9. कृष्ण कुमार गोस्वामी, (2019), अनुवाद विज्ञान की भूमिका (वैश्विक संचार के संदर्भ में), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 158
10. जगदीश्वर चतुर्वेदी, (2020), सूचना तकनीक और हिंदी, अनन्या प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 167
11. धनंजय जैन, (2019), विश्व भाषा के रूप में हिंदीरू चुनौतियां और संभावनाएं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 52
12. भोलानाथ तिवारी, (2018), हिंदी भाषा की संरचना, लिपि प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 358
13. पुष्पेश पंत, (2022), 21वीं सदी में हिंदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 53
14. आशुतोष मिश्र, (2022), डिजिटल युग में हिंदी, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 63
15. विद्यानिवास मिश्र, (2017), हिंदी की शब्द संपदा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 63
16. गोपाल राय, (2020), हिंदी भाषा का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 85
17. विमलेश कांति वर्मा, (2015), हिंदी का अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, पृ. 86
18. रामविलास शर्मा, (2018), भारत की भाषा समस्या, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 61
19. सूर्यप्रसाद शुक्ल, (2020), वैश्विक हिंदी का स्वरूप, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 96
20. चतुर्भुज सहाय, (2023), विश्व मंच पर हिंदी, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 76
21. उदय नारायण सिंह, (2020), भाषाई अस्मिता और हिंदी, नेशनल बुक ट्रस्ट (छठज), भारत सरकार, पृ. 79